NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

# M.R.D. - 101

# ग्राम विकास : भारतीय संदर्भ

## ( Rural Development: Indian Context )

**Chapter Wise Reference Book**
**Including Many Solved Sample Papers**

*Based on*

# I.G.N.O.U.

**& Various Central, State & Other Open Universities**

By: *Manish Kumar*

**NEERAJ PUBLICATIONS**
*(Publishers of Educational Books)*

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

*Content*

# ग्राम विकास : भारतीय संदर्भ

## ( Rural Development: Indian Context )


Question Paper—June-2023 (Solved) ..... 1

Question Paper—December-2022 (Solved) ..... 1-2

Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) ..... 1-2

Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) ..... 1-2

Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) ..... 1-2

Question Paper—June, 2019 ( Solved ) ..... 1-2

Question Paper—December, 2018 ( Solved ) ..... 1-3

Question Paper—June, 2018 ( Solved ) ..... 1-2

Question Paper—December, 2017 ( Solved ) ..... 1

Question Paper—June, 2017 ( Solved ) ..... 1-2


| S.No. | Chapterwise Reference Book | Page |
|---|---|---|

### ग्रामीण समाज एवं अर्थव्यवस्था ( Rural Society and Economy )


1. ग्रामीण समाज का परिचय ( Introduction to Rural Society ) ..... 1

2. ग्रामीण जनसांख्यिकी ( Rural Demography ) ..... 10

3. ग्रामीण सामाजिक संरचना ( Rural Social Structure ) ..... 17

4. ग्रामीण आर्थिक संरचना ( Rural Economic Structure ) ..... 26

5. ग्रामीण निर्धनता ( Rural Poverty ) ..... 34


### ग्राम विकास : अवधारणा, कार्यनीतियाँ और अनुभव
### ( Rural Development: Concept, Experience and Strategies )


6. विकास : एक विहंगावलोकन (Development: An Overview) ..... 40

7. ग्राम विकास : अवधारणाएँ और कार्यनीतियाँ ..... 46
( Rural Development: Concepts and Strategies )

8. ग्राम विकास अनुभव : एक एशियाई परिप्रेक्ष्य ..... 52
( Rural Development Experiences: An Asian Perspective )

9. भारत में ग्राम विकास ( Rural Development in India ) ..... 59

## ग्राम विकास : कृषि सम्बन्धी मुद्दे ( Rural Development : Agrarian Issues )

10. कृषिक आंदोलन ( Agrarian Movements ) ..... 66

11. भूमि सुधार ( Land Reforms ) ..... 74

12. हरित क्रांति ( Green Revolution ) ..... 82

13. कृषि विस्तार सेवाएँ ( Agricultural Extention Services ) ..... 89

## ग्राम विकास प्रशासन (Rural Development Administration)

14. प्रशासनिक ढाँचा ( Administrative Structure ) ..... 97

15. पंचायती राज ( Panchayati Raj ) ..... 103

16. ग्राम विकास के क्षेत्र में सहकारी समितियाँ ..... 109
( Co-operatives in Rural Development Sector )

17. ग्रामीण ऋण और बैंकिंग ( Rural Credit and Banking ) ..... 117

## ग्रामीण भारत में परिवर्तन की गत्यात्मकता (Dynamics of Change in Rural India)

18. सामाजिक बदलाव : गतिशीलता और लामबंदी ..... 125
( Social Change: Mobility and Mobilisation )

19. सशक्तिकरण ( Empowerment ) ..... 131

20. सूचना, शिक्षा और संचार (आई.ई.सी.) ..... 139
( Information, Education and Communication–IEC )

21. सूचना प्रौद्योगिकी और ग्राम विकास ..... 148
( Information Technology and Rural Development )

# Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

*Published by:*

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

# QUESTION PAPER

***June – 2023***

*(Solved)*

## ग्राम विकास : भारतीय संदर्भ
**(Rural Development: Indian Context)**

**M.R.D.-101**

*समय : 3 घण्टे ]* *[ अधिकतम अंक : 100*

***नोट :*** *(i)* सभी **पांच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। *(ii)* सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

**प्रश्न 1. अल्पविकास की विशेषताओं की चर्चा कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-6, पृष्ठ-40, 'अल्पविकसित देशों की विशेषताएं'

**अथवा**

**संगठित बैंकिंग द्वारा ग्रामीण ऋण की देखरेख कैसे करेंगे?**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-17, पृष्ठ-119, 'संगठित बैंकिंग और ग्रामीण बैंकिंग'

**प्रश्न 2. ग्राम विकास में संचार की भूमिका का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-20, पृष्ठ-139, 'संचार और ग्राम विकास'

**अथवा**

**पूंजीवादी अंत:विरोधों से उत्पन्न आन्दोलनों की चर्चा कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-10, पृष्ठ-69, 'पूंजीवादी विरोधाभासों से उत्पन्न होने वाले आन्दोलन'

**प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**( क ) ग्रामीण एवं शहरी समाजों के फर्क एवं अंत:-संबंधों की चर्चा कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'ग्रामीण एवं शहरी समाज : अन्तर एवं संबंध'

**( ख ) ग्राम विकास नीतियों पर संक्षेप में लिखिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-7, पृष्ठ-47, 'ग्राम विकास की नीतियां'

**( ग ) सामाजिक गतिशीलता का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-3, पृष्ठ-19, 'भारतीय ग्रामों में सामाजिक गतिशीलता'

**प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**( क ) जनजातियां एवं कृषक**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'जनजातियां एवं कृषक'

**( ख ) समुदाय विकास कार्यक्रम**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-9, पृष्ठ-59, 'सामुदायिक विकास कार्यक्रम'

**( ग ) नक्सलबाड़ी**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-10, पृष्ठ-68, 'नक्सलबाड़ी व नक्सली आन्दोलन (1967 के आगे)'

**( घ ) हरित क्रांति**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-4, पृष्ठ-30, प्रश्न 1

**( ङ ) सहकारी विपणन**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-16, पृष्ठ-112, 'सहकारी विपणन'

**( च ) सशक्तिकरण के अनिवार्य तत्व**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-19, पृष्ठ-131, 'सशक्तिकरण के अनिवार्य तत्व'

**प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**( क ) जनसांख्यिकी**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-2, पृष्ठ-10, 'जनसांख्यिकी का अर्थ'

**( ख ) वृद्धि बनाम वितरण**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-6, पृष्ठ-42, 'वृद्धि बनाम वितरण'

**( ग ) समेकित ग्राम विकास**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-8, पृष्ठ-55, 'समेकित ग्राम विकास कार्यक्रम'

**( घ ) कृषक वर्ग**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-10, पृष्ठ-66, 'कृषक'

**( ङ ) कृषि विस्तार**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-13, पृष्ठ-89, 'कृषि विस्तार की संकल्पना एवं क्षेत्र'

**( च ) अशोक मेहता समिति**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-15, पृष्ठ-104, 'अशोक मेहता समिति'

**( छ ) सहभागितापरक विकास**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-19, पृष्ठ-135, प्रश्न 5

**( ज ) लोक मीडिया**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-20, पृष्ठ-143, 'लोक संचार माध्यम'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

# QUESTION PAPER

***December – 2022***

*(Solved)*

## ग्राम विकास : भारतीय संदर्भ
## (Rural Development: Indian Context)

**M.R.D.-101**

*समय : 3 घण्टे ]* *[ अधिकतम अंक : 100*

***नोट :*** *(i)* सभी **पांच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। *(ii)* सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

**प्रश्न 1. भारत में गरीबी के अनुमान का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-5, पृष्ठ-36, 'भारत में निर्धनता का आकलन'

*अथवा*

**भारत में साख सहकारिता की वृद्धि एवं विकास की चर्चा कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-16, पृष्ठ-111, 'सहकारी ऋण समितियों की वृद्धि और विकास'

**प्रश्न 2. ग्रामीण विकास के विभिन्न सिद्धांतों का आलोचनात्मक वर्णन कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-7, पृष्ठ-46, 'ग्राम विकास की संकल्पनाएँ'

*अथवा*

**भारतीय संदर्भ में जाति एवं वर्ग की अवधारणा को समझाइए और सामाजिक गतिशीलता में उनकी भूमिका पर चर्चा कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-3, पृष्ठ-18, 'जाति और वर्ग' पृष्ठ-19, 'भारतीय ग्रामों में सामाजिक गतिशीलता'

**प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**(क) संचार में आने वाली बाधाओं को संक्षिप्त में समझाइए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-20, पृष्ठ-141, 'संचार की बाधाएँ', पृष्ठ-145, प्रश्न-1, पृष्ठ-146, प्रश्न-2

**(ख) भारत में सांगठनिक कृषि विस्तार सेवाओं के विभिन्न उपागम क्या हैं? चर्चा कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-13, पृष्ठ-89, 'कृषि विस्तार की संकल्पना एवं क्षेत्र', पृष्ठ-90, 'कृषि विस्तार सेवाओं को संगठित करने के विभिन्न अभिगम'

**(ग) पंचायत उपबंध (अनुसूचित क्षेत्रों पर विस्तार) अधिनियम, 1996 के प्रावधानों की मुख्य विशेषताओं की संक्षिप्त चर्चा कीजिए।**

**उत्तर–**पंचायतों के प्रावधान (अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तार) अधिनियम, 1996 या PESA भारत के अनुसूचित क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए पारंपरिक ग्राम सभाओं के माध्यम से स्वशासन सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार द्वारा अधिनियमित एक कानून है। अनुसूचित क्षेत्र भारत के संविधान की पांचवीं अनुसूची द्वारा पहचाने गए क्षेत्र हैं। अनुसूचित क्षेत्र भारत के उन दस राज्यों में पाए जाते हैं, जिनमें जनजातीय समुदायों की प्रमुख आबादी है। अनुसूचित क्षेत्र 73वें संवैधानिक संशोधन या पंचायती राज अधिनियम द्वारा कवर नहीं किए गए थे। PESA को 24 दिसंबर 1996 को कुछ अपवादों और संशोधनों के साथ संविधान के भाग IX के प्रावधानों को अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तारित करने के लिए अधिनियमित किया गया था। PESA ने प्रथागत संसाधनों, लघु वन उपज, लघु खनिजों, लघु जल निकायों, लाभार्थियों के चयन, परियोजनाओं की मंजूरी जैसे कई मुद्दों के संबंध में पंचायतों और ग्राम सभाओं को स्व-शासन की एक प्रणाली को लागू करने में सक्षम बनाने की मांग की। PESA पंचायतों और अनुसूचित क्षेत्रों से संबंधित संविधान के भाग IX के प्रावधानों के विस्तार के लिए एक अधिनियम है। PESA को अनुसूचित क्षेत्रों में आदिवासी समुदायों के लिए एक सकारात्मक विकास के रूप में देखा गया था, जो पहले आधुनिक विकास प्रक्रियाओं के साथ जुड़ाव और स्वतंत्र भारत में बने औपनिवेशिक कानूनों और विधियों दोनों के संचालन से काफी पीड़ित थे। वन, भूमि और अन्य सामुदायिक संसाधनों तक पहुंच के नुकसान ने उनकी भेद्यता को बढ़ा दिया था। विकास परियोजनाओं के कारण बड़े पैमाने पर भूमि अधिग्रहण और विस्थापन के कारण अनुसूचित क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासी समुदायों में बड़े पैमाने पर संकट पैदा हो गया था। PESA को इन कमजोरियों में से कई के लिए एक रामबाण के रूप में देखा गया था और विकास के एक नए प्रतिमान को पेश करने की मांग की

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

# Sample Preview of The Chapter

*Published by:*

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com



# ग्राम विकास : भारतीय संदर्भ
## ( RURAL DEVELOPMENT : INDIAN CONTEXT )

## ग्रामीण समाज एवं अर्थव्यवस्था
## ( Rural Society and Economy )

# ग्रामीण समाज का परिचय
## ( Introduction to Rural Society )

1

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

## परिचय

ग्रामीण समाज की संकल्पना महत्त्वपूर्ण है जिससे जानना आवश्यक है। 2001 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल आबादी का 72.22% हिस्सा 6 लाख 38 हजार 691 ग्रामों में बसा हुआ है। किन्तु यह भाग अब धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। 1901 में 89.2% आबादी ग्रामों में बसी थी जो 1961 में 82.03% पहुँच गयी। ग्रामीण आबादी में धीरे-धीरे कमी होती जा रही है एवं शहरी आबादी में वृद्धि परन्तु आज भी भारत की अधिकांश आबादी गाँवों में ही निवास करती है। उनकी आजीविका का प्रमुख साधन कृषि ही है। अत: देश के विकास के बारे में बात करते समय ग्रामीण समाज पर भी ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक है। जब तक भारत के ग्रामों का विकास नहीं होगा तब तक भारत का विकास नहीं होगा।

इस अध्याय में ग्रामीण समाज की संकल्पना पर चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त ग्राम, देहात एवं लोक समाज जैसे शब्दों पर भी विचार करने के साथ ग्रामीण एवं शहरी समाजों के बीच के अन्तर, ग्रामीण एवं शहरी समाज की विशेषताएँ एवं उनके बीच संबंध, ग्रामों के विविध स्वरूप एवं भारत में किए गए कुछ महत्त्वपूर्ण ग्रामीण अध्ययनों के बारे में भी चर्चा की गई है। साथ ही बृहत एवं लघु परंपराओं एवं इनकी विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला गया है।

## अध्याय का विहंगावलोकन

### ग्रामीण समाज की संकल्पना

ग्रामीण समुदाय को परिभाषित करने का आधार है जनसंख्या का आकार एवं घनत्व। ग्रामीण शब्द को भारत में आय के आधार पर परिभाषित किया जाता है। इसके अन्तर्गत एक गाँव या गाँवों का समूह शामिल होता है। भारतीय जनगणना आयोग के अनुसार गाँवों की एक निश्चित परिसीमा होती है।

भारतीय ग्राम विविधता से पूर्ण हैं एवं हर राज्य गाँवों की राज्यों में इनकी संख्या भी अलग-अलग है। 1991 की जनगणना के अनुसार सबसे ज्यादा ग्राम उत्तर प्रदेश में (1,12,566) थे, उसके बाद मध्य प्रदेश (71,352), बिहार (67,546), उड़ीसा (46,553) और महाराष्ट्र (39,354) का स्थान आता है। सबसे कम ग्राम सिक्किम (440) एवं नागालैंड (1,112) में हैं।

पंजाब के ग्राम काफी समृद्ध हैं क्योंकि इन ग्रामों में बसे परिवारों के सदस्य विदेशों से काफी धन अपने परिवारों को भेजते हैं। इन ग्रामीण परिवारों में ज्यादातर सदस्य वृद्ध ही हैं क्योंकि युवा सदस्य विदेशों में नौकरी करते हैं, इसलिए इन ग्रामों को वृद्ध ग्राम भी कहते हैं। ये वृद्ध लोग या तो सेवानिवृत्त होकर जीवन निर्वाह कर रहे हैं या खेती-बाड़ी से जुड़े हुए हैं।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com



दूसरी तरफ बिहार, उड़ीसा एवं छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में अत्यन्त गरीब एवं पिछड़े हुए गाँव हैं, जहाँ लोगों को अपनी जीविका चलाने के लिए अपने बच्चों तक को भी बेचना पड़ जाता है। पर्यावरण की प्रतिकूलता के कारण राजस्थान के कई गाँव विलुप्त होने के कगार पर हैं। सीमावर्ती गाँवों में भी काफी बदलाव हो रहे हैं। दिल्ली में अनेक रिहायशी कालोनियाँ पहले गाँव ही थीं, परन्तु अब ये शहरी रूप धारण कर चुकी हैं। कोहिमा जैसे छोटे ग्राम भी अब शहरों के रूप में परिवर्तित होते जा रहे हैं।

भारतीय ग्राम बहुजातीय भी हैं एवं एकजातीय भी। कुछ ग्राम शहरों के काफी निकट हैं जबकि कुछ ग्राम दूरदराज के पिछड़े क्षेत्रों में स्थित हैं। कुछ ग्राम जीवन की मूलभूत सुविधाओं की दृष्टि से काफी विकसित हैं। भारत में विभिन्न राज्यों के ग्रामों में जीवन शैली एवं भौतिक दशाओं की दृष्टि से काफी विविधता परिलक्षित होती है, परन्तु कुछ ऐसी विशेषताएँ भी हैं, जो सभी ग्रामों में लगभग एक समान हैं। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र निरन्तरता के दो छोरों से बँधे हुए हैं। इन छोरों पर बसे सभी समाजों में ग्रामीण एवं शहरी विशेषताओं का शुद्ध रूप देखने को मिलता है। इन समाजों में ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों का प्रभाव होता है जो समाज ग्रामीण छोर की तरफ हैं वहाँ ग्रामीण विशेषताएँ अधिक दिखती हैं, जबकि शहरी छोर वाले समाज में शहरी विशेषताएँ अधिक देखने में आती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों का शहरी क्षेत्रों में परिवर्तित होना शहरीकरण कहलाता है। पंजाब के ग्रामों में शहरों से लोग प्रवास कर रहे हैं एवं उनकी प्रत्येक गतिविधि में शहरी जीवन की झलक देखने को मिलती है।

ग्रामीण समाज एवं शहरी समाज के बीच अन्त:क्रिया होती है जिसके परिणामस्वरूप अधिकांश समाज एक नया रूप धारण कर लेते हैं। यह ग्रामीण समाज पर शहरी प्रभाव के रूप में परिलक्षित होता है।

## ग्रामीण समाज का आदर्श नमूना

ग्रामीण शब्द का अर्थ ग्राम, देहात या लोक समाज भी होता है, जिसमें से ग्राम ही सर्वाधिक प्रचलित है। देहात (कंट्रीसाइड) शब्द का प्रयोग पश्चिमी जगत में किया जाता है जिसका अर्थ ऐसे स्थान से लगाया जाता है जो भीड़-भाड़ से दूर एवं प्रकृति के निकट हो जहाँ लोग मनोरंजन के लिए जाते हैं। पिछड़े एवं विकासशील देशों के ग्रामों के विपरीत विदेशों में ये स्थान सुविधाओं से पूर्ण होते हैं।

'लोक' शब्द को रेडफील्ड ने लोकप्रिय किया है। इसका अर्थ है–पारंपरिक सजातीय समुदाय के व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह। समान जाति से गठित समाज को लोक समाज कहते हैं। लोक समाज अपने अतीत को काफी महत्त्व देता है। लोक समाज अपनी परंपराओं, मान्यताओं एवं अपनी विरासत से पूरी तरह संतुष्ट होता है एवं इन पर गर्व करता है। परंपरा जो सामाजिक व्यवहार और विचारधारा के रूढ़िगत स्वरूप को दर्शाती है अर्थात् जो नियम एवं विचार पहले बन गये, वे उसी रूप में कायम रहेंगे।

शहरी समाज भविष्य के प्रति ज्यादा सजग है। यहाँ लोग सुख-सुविधाओं के साधन ज्यादा से ज्यादा प्राप्त करना चाहते हैं। शहरी समाज भविष्य की ओर देखता है जबकि ग्रामीण समाज की सोच पिछड़ी बनी रहती है। शहरी समाजों में काफी बदलाव देखने में आते हैं जबकि ग्रामीण समाज बदलावों की दृष्टि से स्थिर होते हैं।

ग्रामीण समाज को निम्नलिखित तथ्यों द्वारा समझा जा सकता है–

- ग्रामीण समाज एक छोटा समाज होता है। इसकी आबादी एवं क्षेत्र काफी कम होता है। इस समाज में बुनियादी सुविधाओं की कमी होती है।
- ग्रामीण समाज की आबादी कम होती है। यहाँ लोग अपनी सामाजिक स्थिति के अनुसार समूह बनाकर रहते हैं। उच्च वर्णों के लोग आस-पास ही रहते हैं एवं छोटी जातियों से पर्याप्त दूरी बनाकर रखते हैं।
- ग्रामीण समाज अपनी आजीविका के लिए कृषि पर ही निर्भर रहता है। अधिकांश लोग कृषि कार्यों से ही जुड़े रहते हैं। इसके अलावा ग्रामीण समाज में दस्तकार एवं कारीगर लोग भी रहते हैं।
- ग्रामीण समाज में कारीगर एवं दस्तकार लोग भी विशेष परिस्थिति में कृषि-कार्य करते हैं। जैसे मानसून के दौरान और उससे उत्पादित उत्पाद उनकी घरेलू जरूरत पूरी करने के लिए काफी होता है।
- भारत के पारंपरिक रीति-रिवाज और शैलियाँ ग्रामीण समाज में ही संरक्षित हैं। अनेक सांस्कृतिक मूल्यों एवं गुणों को शहरी क्षेत्रों तक पहुँचाया जाता है जहाँ ये शहरी जीवन के अभिन्न अंग बन जाते हैं। भारत को समझने के लिए उसके ग्रामों को समझना आवश्यक है।

## जनजातियाँ एवं कृषक

ग्रामीण समाज विभिन्न लोगों, विभिन्न ग्रामों एवं विभिन्न संस्कृतियों से मिल-जुलकर बनता है, जहाँ कृषि मुख्य व्यवसाय होता है एवं विभिन्न दस्तकार एवं शिल्पकार भी किसी न किसी रूप से कृषि कार्यों से ही जुड़े होते हैं। ग्राम में कुछ अन्य समुदाय भी बसे होते हैं, जिन्हें जनजातियाँ कहा जाता है। ऐसे

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com



भी ग्राम हैं जहाँ केवल जनजातियाँ ही रहती हैं। हाल के सरकारी आंकड़ों के अनुसार भारत की जनजातीय आबादी में 67.8 मिलियन लोग अनुसूचित जनजाति से संबद्ध हैं जो भारत की कुल आबादी का लगभग 8.08% है। भारत में अनुसूचित जनजातियों की संख्या 698 है। पंजाब, हरियाणा जैसे राज्यों में एवं दिल्ली, चंडीगढ़ एवं पांडिचेरी जैसे केन्द्र शासित प्रदेशों में अनुसूचित जनजातियाँ न के बराबर हैं। इनकी सबसे ज्यादा संख्या उड़ीसा में हैं।

संविधान के अनुच्छेद 342 में अनुसूचित जनजातियों का उल्लेख है। राष्ट्रपति किसी जाति को अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने से पहले उनकी विशेषताएँ, उनकी संस्कृति, उनका पिछड़ापन आदि तथ्यों को ध्यान में रखता है। 698 अनुसूचित जनजातियों में से 75 जनजातियाँ अत्यधिक पिछड़ी हुई हैं। ये आदिम अवस्था में ही जीवनयापन कर रही हैं एवं इनकी जनसंख्या लगातार घट रही है।

जनजाति को परिभाषित करने में उनकी अलग-थलग स्थिति पर विशेष जोर दिया जाता है। जनजातियों का अन्य समुदायों से संबंध कम होता है। इनकी अपनी मूल संस्कृति होती है, जो अन्य समुदायों की संस्कृति से अलग होती है इसलिए इन्हें 'सांस्कृतिक-पृथक समूह' भी कहा जाता है। जनजातीय समाज को समझने के लिए बाहरी जगत का अध्ययन आवश्यक नहीं है। जनजातीय समाज एक पूर्ण समाज होता है।

कृषक शब्द को विशिष्टता रेडफील्ड के कार्यों के फलस्वरूप प्राप्त हुई। सर्वप्रथम अमेरिकी विज्ञानी क्रोबर ने इस शब्द को परिभाषित किया था। उनके अनुसार कृषक ग्रामीण क्षेत्र से संबंधित होते हैं एवं उनका संबंध शहरी बाजारों से होता है। वे एक बड़ा जन समुदाय वर्ग हैं। ये आंशिक समाज हैं, जिनमें पृथकता, स्वायत्तता एवं आत्मनिर्भरता नहीं होती, परन्तु अपनी मिट्टी एवं परंपराओं के प्रति लगाव अवश्य होता है। कृषक जनजातियों की तरह समाज से अलग नहीं रहते। क्रोबर के अनुसार कृषक कृषि कार्य करते हैं। साथ ही उन्हें अतिरिक्त उत्पादन भी करना पड़ता है। अतिरिक्त उत्पादन को ये शहरी क्षेत्रों में भेज देते हैं और उसके बदले अन्य वस्तुएँ खरीद लेते हैं, जिनका उत्पादन वे नहीं करते। कृषक शहरी बाजारों पर निर्भर होते हैं। क्रोबर के अनुसार कृषकों की अन्य समुदायों से अन्त:क्रिया होती है जिसका प्रभाव इनके जीवन के समस्त पहलुओं पर पड़ता है। जार्ज फोस्टर के अनुसार, "कृषकों से अर्द्ध समाज बनता है।"

भारत में प्राचीन समय में ही जनजाति समाज की उपस्थिति रही है। प्राचीन समय में भी जनजाति समाज एवं दूसरे समुदायों के बीच लेन-देन के संबंध कायम थे। जनजातीय समाज अन्य समुदायों की कुछ चीजों की आपूर्ति करते थे, जिसमें शहद, जड़ी-बूटी जाल इत्यादि प्रमुख थे जिसके बदले में इन्हें अन्य समुदायों से खाद्यान्न एवं कपड़े प्राप्त होते थे। इसके अतिरिक्त जनजाति समुदाय अपने औषधीय ज्ञान एवं दैवी शक्ति से अन्य समुदाय के व्यक्तियों का उपचार भी करते थे। जब जमींदारों एवं साहूकारों ने इन लोगों पर अपना आधिपत्य जमाना शुरू कर दिया तो ये अन्य समुदायों से अलग-थलग हो गये जो इनके लिए हानिकारक रहा। ऐसे शोषकों से बचने का इनके पास एकमात्र उपाय था अंदरूनी एकाकी क्षेत्रों की ओर प्रस्थान ताकि दमनकारी शक्तियों के शोषण से बचा जा सके।

भारत में जनजातियाँ कृषि कार्यों से भी जुड़ी हुई हैं, जिसके कारण इनकी पहचान मुश्किल होती है एवं ये कृषक के रूप में ही जाने जाते हैं। कुछ विद्वानों ने इन्हें 'जनजातीय कृषक' का दर्जा देने का प्रस्ताव रखा है। कुछ जनजातियां ग्रामों के निकट बस गईं एवं अन्य समुदायों से इनका संबंध बढ़ने लगा। कालान्तर में ये जनजातियाँ ग्रामों का अभिन्न अंग बन गईं।

कृषि के अतिरिक्त भारत में जनजातियाँ मछलीपालन, बागवानी, शिकार, झूम कृषि, कला एवं शिल्प जैसे कार्यों से भी जुड़ी हुई हैं। ये लोग विविध प्रकार की आर्थिक गतिविधियों को अपनाते रहते हैं। ये आर्थिक गतिविधियाँ भौगोलिक दशाओं पर निर्भर करती हैं जिसके कारण ये लोग शिकार एवं मछलीपालन जैसे कार्य करते हैं। किसानों के भरे-पूरे गाँव होते हैं वहीं जनजातियाँ छोटे-छोटे समूहों में निवास करती हैं और नातेदारी के रिश्तों में बंधी होती हैं। ऐसे समूहों को 'हेमलेट' कहते हैं। हेमलेट किसी गाँव का भाग हो सकता है। हेमलेटों के समूह को भी ग्राम कहा जा सकता है।

## ग्रामीण एवं शहरी समाज : अन्तर एवं संबंध

ग्रामीण एवं शहरी समाज की तुलना महत्त्वपूर्ण है। पिछले कुछ समय से ग्रामीण समाजों में काफी बदलाव देखने को मिल रहे हैं। कुछ शहरी समाजों में घुल-मिल गए हैं, कुछ शहरी समाजों जैसे नजर आते हैं एवं कुछ शहरी समाज से बहुत कम प्रभावित हैं। जो ग्राम शहरों के निकट हैं उनमें अन्दरूनी क्षेत्रों के ग्रामों की तुलना में ज्यादा बदलाव आये हैं। जिसके कारण ये ग्राम पहले कस्बे एवं फिर शहरों में परिवर्तित हो रहे हैं।

शहरों में परिवर्तित होने वाले ग्रामों को रेडफील्ड और सिंगर ने 'विकासवादी शहर' के नाम से संबोधित किया है। इनका मूल गाँव ही होता है। विजातीय शहर उसे कहते हैं, जिसमें अलग-अलग व्यक्ति निवास करते हैं। इन शहरों का

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com



कोई मूल अस्तित्व नहीं होता बल्कि ये बाहरी लोगों से ही बनते हैं। विकासवादी शहरों में गाँवों से आकर जो लोग बसते हैं उन पर शहरी संस्कृति का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है, परन्तु विजातीय शहरों में स्थिति अलग होती है। विकासवादी शहरों में ग्रामीण परंपराओं का भी प्रभाव होता है जिसमें ग्रामीण लोग आसानी से घुल-मिल जाते हैं, जबकि विजातीय शहरों में प्रवासियों को अकेलापन महसूस होता है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं।

**ग्रामीण क्षेत्रों की विशेषताएँ**–ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि ही मुख्य व्यसाय होती है। वास्तव में ग्रामीण क्षेत्रों को खाद्य उत्पादक इकाइयाँ कहा जाता है। ग्रामीण क्षेत्र न केवल अपने लिए बल्कि शहरों के लिए भी खाद्यान्न उपजाता है। शहरी समाजों में कृषि महत्त्वपूर्ण नहीं होती। जनजातीय समाज भी सीमित मात्रा में ही अन्न उपजाता है। कृषक उसे कहा जाता है जो खाद्यान्न का उत्पादन बड़े पैमाने पर करता है एवं जिसका उद्देश्य कृषि से लाभ कमाना होता है।

कृषकों द्वारा उत्पादित खाद्य वस्तुएँ शहरों को भेजी जाती हैं। शहरी लोगों की आर्थिक जरूरतें पूरी होने पर वे अपना ध्यान अन्य व्यवसायों की ओर लगा सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि ही उत्पादन का साधन एवं आजीविका का स्रोत है, जबकि शहरों में औद्योगिक वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन एवं व्यावसायिक विविधता नजर आती है। शहरों में व्यावसायिक रूप से दक्ष व्यक्तियों की काफी आवश्यकता रहती है और ये शहरी समाज के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन लोगों को व्यावसायिक दक्षता प्राप्त करने के लिए उच्च शिक्षा एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त शहरों में अर्द्ध-कुशल कामगार भी होते हैं।

प्रत्येक ग्राम में एक पंचायत होती है, जो लोगों के झगड़ों का फैसला करती है। ग्रामों से संबंधित प्रत्येक महत्त्वपूर्ण पहलू को शहरों से ही नियंत्रित किया जाता है। ग्रामों द्वारा जो माल शहरों को भेजा जाता है उसकी कीमत भी शहरों में स्थित राजनीतिक सत्ता तय करती है जिसका ग्रामीण लोगों द्वारा अक्सर विरोध किया जाता है। उदाहरणार्थ, जब राजनीतिक सत्ता ने गन्ने एवं तिलहन की कम कीमतें निर्धारित की तो कृषकों ने इसका विरोध किया। इसी तरह फर की कीमतों में कमी करने पर पशुपालकों ने इसका विरोध किया था।

ग्रामीण लोग आन्तरिक गतिशीलता का प्रयोग अपने उद्देश्य प्राप्ति के लिए करते हैं। लेकिन कई बार सहयोग के अभाव के कारण यह सफल नहीं हो पाता और शहरी दमनकारी शक्तियों के हाथों ग्रामीणों का शोषण होता चला जाता है। मार्शल साहलिन ने ऐसे कृषकों को 'दुर्बल' कहा है, जिनमें परिवर्तन लाने का साहस नहीं है। आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से शहरों ने ग्रामों पर अपना प्रभाव स्थापित कर रखा है। ग्रामीण समाज सजातीय होते हैं। इसके अतिरिक्त इन समाजों में बदलाव काफी कम होता है। इन समाजों में अंत:क्रिया की एक सीमा होती है इसलिए इन्हें 'लघु पैमाने के समाज' कहा जाता है। इन समाजों में लोगों के लिए परंपरा एवं धर्म का विशेष महत्त्व होता है। इसके अतिरिक्त व्यवसाय एवं जीवन साथी के चुनाव में इनकी स्वतंत्रता भी सीमित होती है। वास्तव में ग्रामीण लोगों की निजी पसंद का दायरा सीमित होता है।

**शहरी विशेषताएँ**–विशाल आकार, ज्यादा एवं घनी आबादी एवं विजातीयता शहरों की विशेषताएँ हैं। ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों को प्रवास शहरी जनसंख्या में वृद्धि करता है। ग्रामों में आबादी उच्च जन्म दर के कारण बढ़ती है। अनेक जनजातियाँ गाँवों के निकट बस जाती हैं। परन्तु ग्राम में स्पष्ट परिवर्तन के लिए इनकी संख्या काफी कम होती है जबकि शहरों में सांस्कृतिक विविधता पाई जाती है। यहाँ विभिन्न पृष्ठभूमि एवं संस्कृतियों के लोग एक साथ रहते हैं। व्यवसाय, आवास एवं शिक्षा आदि के संदर्भ में शहरों में अत्यधिक विविधता है एवं प्रौद्योगिकी का स्वरूप जटिल होता है जिसे घर पर नहीं सीखा जा सकता। इसके लिए विशिष्ट एवं उच्च कोटि के संस्थानों की आवश्यकता होती है। प्रौद्योगिकी का जटिल स्वरूप समाज को भी जटिल बना देता है।

शहरी समाजों में बदलाव काफी तीव्र गति से होता है क्योंकि शहरी लोगों का अन्त:क्रिया क्षेत्र काफी बड़ा होता है। ये विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित लोगों से अन्त:क्रिया करते हैं। अन्त:क्रिया की विविधता को नियंत्रित करने के लिए सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता पड़ती है। शहरी जीवन समय की पाबन्दी एवं विभिन्न नियमों से नियंत्रित होता है। शहरी ढाँचा ग्रामीण ढाँचे से बिल्कुल अलग होता है। शहरी समाजों में लोगों के संबंध औपचारिक ही होते हैं जबकि ग्रामों में लोगों के बीच संबंध प्रेम और विश्वास पर आधारित होते हैं। वास्तव में शहरी समाज ग्रामीण समाज की तुलना में अधिक गतिशील होता है।

ग्रामीण एवं शहरी समाजों के बीच अन्तर को कई तरह से स्पष्ट किया जा सकता है। ग्रामीण परंपराओं एवं विशेषताओं को शहरों में उत्कृष्टता एवं क्रमबद्धता प्रदान कर वापस ग्रामों में इनकी वापसी कर दी जाती है। शहरी बदलावों का असर भी ग्रामों में देखा जाता है।

## लघु एवं बृहत परंपराएँ

ग्रामीण एवं शहरी समाजों के संबंधों को समझने में लघु एवं बृहत परम्पराएँ काफी महत्त्वपूर्ण हैं। रेडफील्ड ने अपने अध्ययन में इनका उल्लेख किया है। लघु समुदाय जिसे एक

www.neerajbooks.com